

Note : If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

Yakmuni KayvannaSumati ane Kumati Mitroni Katha ane Jain Dharmna Pustakonu Suchipatra

| | |
|-------------|---|
| Folder No. | 003686 |
| Granth Name | Yakmuni KayvannaSumati ane Kumati Mitroni Katha ane Jain Dharmna Pustakonu Suchipatra |
| Author | Shravak Bhimsinh Manak |
| Publisher | Shravak Bhimsinh Manak |
| Edition | 1 |
| Year | 1914 |
| Pages | 300 |

यकमुनि, कयवन्ना, सुमति अने कुमति मित्रोनी कथा अने जैन धर्मना पुस्तकोनुं सूचीपत्र

| | |
|--------------|--|
| फोल्डर नं. | ०१८०५३ |
| ग्रन्थ | यकमुनि, कयवन्ना, सुमति अने कुमति मित्रोनी कथा अने जैन धर्मना पुस्तकोनुं सूचीपत्र |
| लेखक | श्रावक भीमसिंह माणक |
| प्रकाशक | श्रावक भीमसिंह माणक |
| आवृत्ति | १ |
| प्रकाशन वर्ष | १९१४ |
| पृष्ठ | ३०० |

मुख्य टाइटल

सूचना

महावीरजिनेन्द्र स्तवन

श्री भगवान विषे

| | |
|--|-----|
| यकमुनि कथा ----- | १ |
| कयवन्नानी कथा----- | ४३ |
| पद्यबंध चरित्रो(रास)नी यादी ----- | ५८ |
| सुमति अने कुमति मित्रोनी कथा ----- | ७७ |
| कथा रत्न कोष विषे ----- | ८२ |
| धर्मस्थानने तथा ग्रहने दीपावे तेवा सुंदर रंग बेरंगी दर्शनीय नकशा आदिक चरित्रोनी यादी ----- | ११० |
| मोतीचंद्र शेठनी कथा ----- | ११३ |
| गुजराती लिपिमां छापेला पुस्तकोनी यादी ----- | १३६ |
| ज्ञानना बे ओल ----- | १४३ |
| छितोपदेश ----- | १४८ |
| अभक्ष्य अनंतकाय विचार ----- | १ |
| भावीश अभक्ष्य वर्णन ----- | १ |
| यवित रस आश्रयनी सूचना ----- | ३३ |

| | |
|---|-----|
| अत्रीश अनंतकाय ----- | ५६ |
| आवीश अत्मक्य परांत बीञ्च अत्मक्य यीञ्चो ----- | ६५ |
| अडु आरंभ थतां तृप्ति न थाय अ पश्यात् छिंसा... ----- | ८० |
| दर्शन विड्ध तथा लोक विड्धना कारणे वर्जवा योग्य वनस्पतिओ ----- | ८२ |
| त्रसञ्चवनी अडुछिंसा थवाना कारणे... ----- | ८४ |
| यावु वपरावामां आवती वनस्पतो ----- | ८७ |
| सुज्ञ भुंनेने ध्यानमां लेवा योग्य सूयनाओ ----- | १०५ |
| परमार्हत कुमारपाण भूपाणना आरप्रतनी संक्षिप्त नोंध ----- | ११६ |